1. इस छन्द में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में अट्ठाइस मात्राएँ होती हैं। सोलह और बारह मात्राओं पर यति होती है। प्रत्येक चरण के अन्त में रगण (ऽ । ऽ) का प्रयोग आवश्यक है—
(क) चौपाई (ख) हरिगीतिका (ग) इन्द्रवज्रा (घ) रोला

2. पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। वह छन्द है—
(क) सोरठा (ख) चौपाई
(ग) दोहा (घ) कुण्डलिया

3. ..... छन्द में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 11, 13 पर यति के साथ 24 मात्राएँ होती हैं।
(क) चौपाई (ख) दोहा
(ग) रोला (घ) बरवै

4. जिस छन्द में चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं और चरण के अन्त में जगण, तगण का प्रयोग नहीं होता, वह कहलाता है—
(क) दोहा (ख) सोरठा
(ग) रोला (घ) चौपाई

5. जिस छन्द में प्रथम-तृतीय चरण में 11-11 मात्राएँ तथा द्वितीय-चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं, वह कहलाता है—
(क) दोहा
(ख) सोरठा
(ग) रोला
(घ) इन्द्रवज्रा

6. जहाँ पहले और तीसरे चरण में 12-12 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 7-7 मात्राएँ होती हैं, और चरण के अन्त में लघु होता है वहाँ छन्द होता है—
(क) कुण्डलिया
(ख) बरवै
(ग) इन्द्रवज्रा
(घ) सवैया

7. हरिगीतिका छन्द के प्रत्येक चरण में मात्राएँ होती हैं—
(क) 24
(ख) 28
(ग) 26
(घ) 22

8. 'रगण' का सही सूत्र है—
(क) ऽऽ।
(ख) ।ऽऽ
(ग) ऽ।ऽ
(घ) ।।।

9. 'जगण' का सही सूत्र है—
(क) ऽऽ।
(ख) ।ऽऽ
(ग) ।ऽ।
(घ) ऽ।ऽ

10. रोला छन्द के प्रत्येक चरण में मात्राएँ होती हैं—

(क) 13 (ख) 11

(ग) 12 (घ) 24

11. "नील सरोरुह स्याम, तरुन अरुन बारिज नयन।
करउ सो मम उर धाम, सदा छीरसागर सयन ।।"

में छन्द है—

(क) चौपाई (ख) सोरठा

(ग) सवैया (घ) बरवै

12. चंपक हरवा अंग मिलि, अधिक सोहाय।
जानि परै सिय हियरै, जब कुँभिलाय ।।

इस पद्य में छन्द है—

(क) रोला (ख) सोरठा

(ग) बरवै (घ) वसन्ततिलका

13. "सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहँसे करुना ऐन, चितै जानकी लखन तन।।"
पद में कौन-सा छन्द है ?

(क) चौपाई (ख) दोहा
(ग) **सोरठा** (घ) बरवै

14. नव उज्ज्वल जलधार, हार हीरक-सी सोहति।
बिच-बिच छहरति बूँद, मध्य मुक्तामनि मोहति।।
उपर्युक्त पद में कौन-सा छन्द है ?

(क) रोला (ख) बरवै
(ग) दोहा (घ) **सोरठा**

15. बिनु पग चले सुने बिनु काना। कर बिनु कर्म करे बिधि नाना।।
तन बिनु परस नयन बिनु देखा। गहे घ्राण बिनु बास असेखा।।
पंक्तियों में कौन-सा छन्द है ?

(क) बरवै (ख) **चौपाई**
(ग) हरिगीतिका (घ) वसन्ततिलका

16. सकल मलिन मन दीन दुखारी। देखी सासु आन अनुसारी।।
पद में कौन-सा छन्द है ?

(क) रोला (ख) सोरठा (ग) दोहा (घ) चौपाई

17. जथा पंख बिनु खग अति दीना।
मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।
इन पंक्तियों में छन्द है—

(क) रोला (ख) कुण्डलिया
(ग) सोरठा (घ) चौपाई

18. "देवी पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर और क्यों? नर मुनि सब होहि सुखारे।।"
पंक्तियों में कौन-सा छन्द है ? और क्यों?

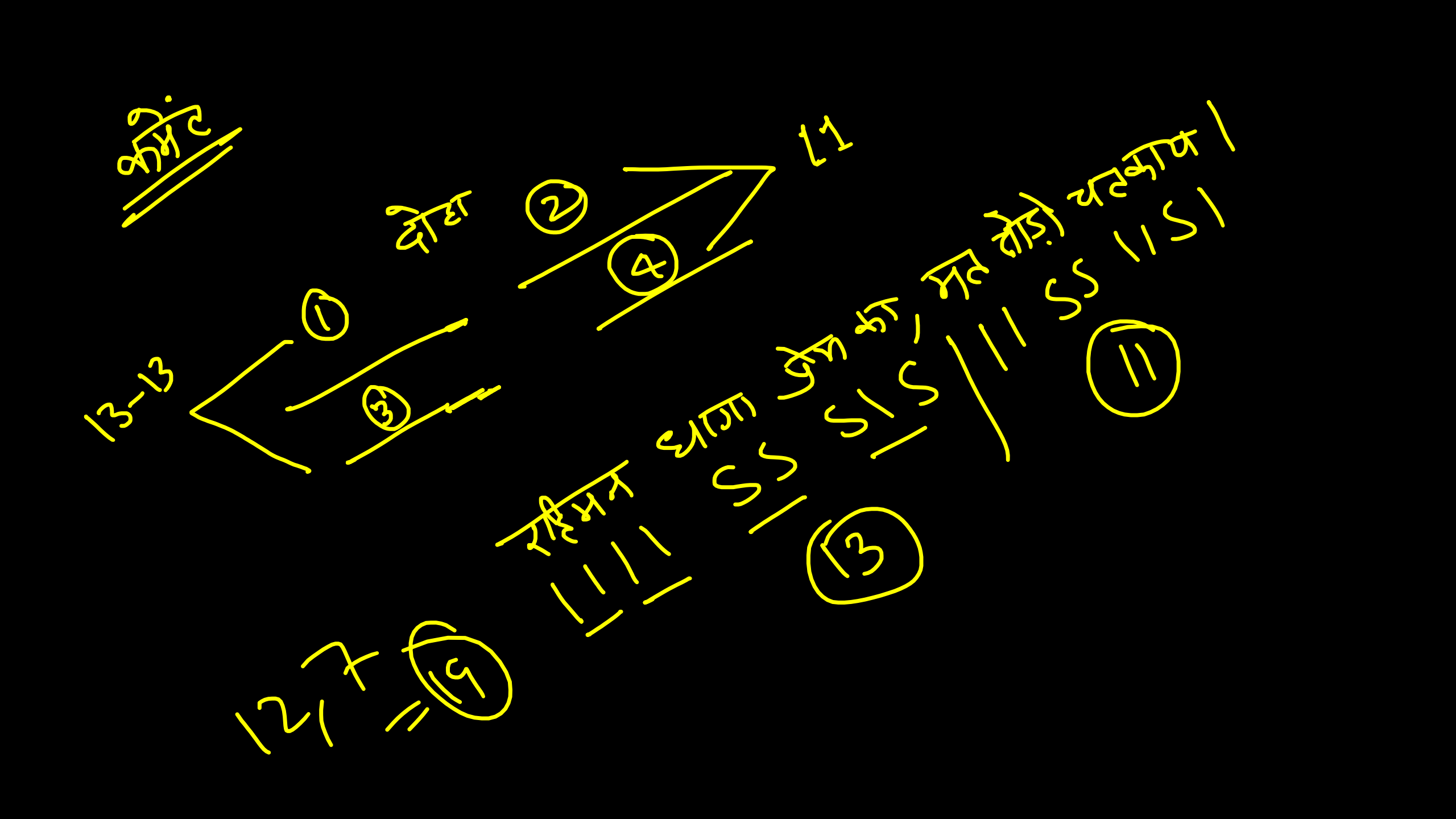

कमेंट

दोहा

13-13 ① ② ③ ④ 11

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।

।।।। SS SIS ।।। SS ।।S।

13 11

12/7 = 9